www.vinoba.in

बेहद दावे

रजि० नं० बी४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

भाग १२ | सम्पादक – प्यारेलाल | अंक ४

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० २३ फरवरी १९४७

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

बुनियादी तालीम

[पिछले सात वरसोंमें हिन्दुस्तानी तालीमी-संघने बुनियादी तालीमके क्षेत्रमें जो काम किया है, अुसकी रिपोर्टकी अेक कॉपी हमें मिली है। तालीमके हमा- नूचे तरीक़ेमें अिन्क़िलाव पैदा करनेका मक़सद रखनेवाली अेक योजनाके प्रयोगके बयानके खयालसे यह रिपोर्ट बड़ा महत्व रखती है। शिक्षामें दिलचस्पी रखनेवाले सभी लोगोंको अिसे ज़रूर पढ़ना चाहिये। जगहकी कमीकी वजहसे हम यहाँ सारी रिपोर्ट नहीं दे सकते। लेकिन अुसके दो महत्त्वपूर्ण और जानकारीसे भरे हुअे हिस्से नीचे दिये जाते हैं।

अिस रिपोर्टकी अंग्रेज़ी और हिन्दी कॉपियाँ हिन्दुस्तानी तालीमी-संघ, सेवाग्राम (वर्धा, सी० पी०)से मिल सकती हैं। क़ीमत फ़ी कॉपी ८ आना है। — सम्पादक]

१

कामकी सफलता

हमारा सात वरसका काम कहाँतक सफल हुआ है अिसको देखनेके लिअे बच्चोंकी तबीयतके विकासको देखना चाहिये, वह विकास चाहे शारीरिक हो या आध्यात्मिक या वैज्ञानिक। चम्पारन (बिहार)के स्कूलोंके और सेवाग्राम-बुनियादी स्कूलके बच्चे अब सात वरसकी शिक्षा पूरी कर चुके हैं। अुनकी योग्यताओंकी जाँच की जा चुकी है।

सात वरसके कामकी मर्यादा यह रखी गअी थी कि अंग्रेज़ी भाषाको छोड़कर मैट्रिकके दरजेतककी योग्यता लड़केके अन्दर आनी चाहिये। अब सवाल यह आता है कि क्या अिस दरजेपर बुनियादी शिक्षा पानेवाले बच्चे पहुँच चुके हैं? मैट्रिककी परीक्षा पास करनेवाले बच्चे अपनी किताबोंमें पढ़े हुअे पाँच विषयोंके कुल नम्बरोंका कुछ भाग हासिल कर लें, तो वे मैट्रिक पास समझे जाते हैं। अिनमें कुछ विषय अिच्छासे चुने हुअे और कुछ आवश्यक होते हैं। सब युनिवर्सिटीके लड़कोंकी योग्यता समान नहीं होती। किसीकी कुछ कम होती है, किसीकी कुछ अधिक। मतलब अिस परीक्षासे यह है कि कुल नम्बरोंका अेक बताया हुआ हिस्सा विद्यार्थी हासिल कर लें, तो फिर वे युनिवर्सिटीमें जा सकते हैं। अिस परीक्षाके प्रश्न-पत्र सालमें अेक दफ़ा विद्यार्थियोंको हल करनेके लिअे दिये जाते हैं।

लेकिन बुनियादी तालीमकी योजनामें मूलोद्योगको अच्छी तरह पूरा करनेसे लड़के-लड़कियोंकी योग्यता मालूम हो जाती है। मूलोद्योगके कामसे दूसरी चीज़ों और बातोंका सम्बन्ध बतानेके साथ ही साथ दूसरे विषयोंकी शिक्षा अैसे वक़्त दी जाती है, जब अुनसे ताल्लुक़ रखनेवाले नये-नये सवालात सामने आ जायँ। आगेका काम समझानेके लिअे पाठ्यक्रम है ही। लेकिन अुसके शब्द-शब्दपर चलनेकी ज़रूरत नहीं। कामको आँखसे देखकर और हाथसे करके बच्चे तालीम हासिल करते हैं, केवल मुँहसे कही हुअी बातें सुनकर नहीं। शिक्षक और बच्चे अपने हर दिनके कामके विवरण फ़िक्रके साथ लिखते हैं। क्लासके अंदरके और बाहरके कामकी परीक्षा भी आम तौरसे समझे हुअे तरीक़ेसे नहीं होती; और अिस तरह बच्चे अेक श्रेणीसे दूसरी श्रेणी (दरजे)में नहीं चढ़ाये जाते। बच्चे अिस बिनापर पास किये जाते हैं कि अुन्होंने अपना रोज़का काम अच्छी तरह किया हो, कामका ब्योरा ठीक तरहसे लिखा हो, हाज़िरी भी अच्छी हो, और शिक्षकोंकी राय भी अुनके लिअे अच्छी हो।

बुनियादी तालीम और अुससे पहिलेकी शिक्षाका कुल ज़माना सात वरसका हुआ। अिस समयमें बच्चोंके अन्दर नये आनेवाले समाजमें अच्छा नागरिक बननेकी नीचे लिखी योग्यतायें पैदा हो जानी चाहियें —

१. शरीरके सब हिस्से समान और अुचित तरीक़ेसे बढ़े हुअे हों, और बच्चा मेहनतसे काम करनेकी शक्ति रखता हो; तन्दुरुस्त और फुर्तीला हो।

२. नये आनेवाले समाजमें आपसमें मिलकर रहनेके समाजी जीवनको समझता हो, और गाँव व घरोंमें होनेवाले कामोंके महत्त्वको जानता हो। देहातकी आर्थिक स्थितिको वह समझता हो।

३. ज़रूरत हो, तो अपने मूलोद्योगके ज़रिये वह अपने वास्ते आवश्यक अन्नके लिअे कमाअी कर सकता हो।

४. कपाससे अपने लिअे वस्त्र बना सकता हो।

५. अपने खानेके लिअे भाजियाँ पैदा कर सकता हो।

६. वह खाना पकाना जानता हो। घरके लोगोंको या अेक साथ रहनेवाले बहुत-से लोगोंके सामने भोजन परोसना अुसे आता हो। अितने बड़े रसोड़ेमें कितना खर्च होगा, अिसका अन्दाज़ा वह पहलेसे लगा सकता हो, और अुसके खर्चका हिसाब रखनेकी अुसकी लियाक़त हो।

७. वह जानता हो कि कौन-सा अन्न हमारे शरीरके लिअे कितने फ़ायदेका है, और किस अन्नसे हम अपनी तन्दुरुस्ती अच्छी रख सकते हैं।

८. गाँवकी सफ़ाअी रखना, बीमारियोंसे गाँवको बचाना और हरअेक आदमीको तन्दुरुस्त रखनेके नियम बताना, ये सभी बातें वह अच्छी तरह जानता हो।

९. प्राथमिक सहायता (फ़र्स्ट अेड)की जानकारी अुसे हो, और मामूली छोटी-मोटी बीमारियोंको सँभाल सकता हो।

१०. को-ऑपरेटिव स्टोर (सहयोगी-भण्डार) चलाने और अुसका हिसाब-किताब रखनेकी योग्यता हो।

११. वह सफ़ाअीके साथ और तेज़ीसे आम सभामें बोल सकनेकी क्षमता रखता हो।

१२. अपने खयालातको और अपनी रिपोर्टको साफ़-साफ़ समझाकर लिख सकता हो।

१३. अपनी मातृभाषाके साहित्यकी अच्छाअियोंको समझ सकता हो, और अितनी हिन्दुस्तानी भाषा जानता हो कि जिससे मामूली काम-काज चला सके।

१४. दोनों लिपियों (नागरी, अुर्दू)में साधारण हिन्दुस्तानी लिखना जानता हो।

१५. धार्मिक और राष्ट्रीय गीत मिलकर गा सकता हो।

१६. हाथकी बनाअी हुअी अच्छी तसवीरोंकी अच्छाअीको कलाकी दृष्टिसे जान लेता हो, और ख़ुद भी नक़्क़ाशी कर सकता हो।

१७. अुसे साअिकिलपर चढ़ना आता हो।

१८. स्कूलमें और गाँवमें त्योहारोंका प्रबन्ध कर सकता हो।

१९. वर्तमान-पत्रोंमें लिखे हुअे हालातके द्वारा दुनियाकी आजकी आर्थिक स्थिति और सामाजिक व राष्ट्रीय बातोंकी अुसे प्रारम्भिक जानकारी हो।

२०. अपने अुद्योग-धन्धेके औज़ारोंके कामके यांत्रिक अुसूलोंको जानता हो ।

२१. खानेकी चीज़ें और कपास पैदा करनेमें विज्ञानकी महत्त्वकी बातें और मूलोद्योगकी बातें समझता हो । शरीर-सफ़ाअी, तन्दुरुस्ती और गाँवमें स्वच्छता रखनेकी बातें जानता हो ।

२२. खाने-पहननेकी चीज़ोंके द्वारा वह हिन्दुस्तान और दुनियाका भूगोल जानता हो ।

२३. वर्तमान-पत्र और मासिक पत्र-पत्रिकाओंका अुपयोग कर सकता हो ।

२४. अितिहास जानता हो, और समझता हो कि देशकी आज़ादीकी लड़ाअी किस तरह चल रही है ।

२५. हिन्दुस्तानके सब धर्मोंकी अिज़्ज़त करता हो, और सब जातियोंमें मेल-मिलाप चाहता हो ।

२६. जात-पाँतका भेद-भाव न रखता हो ।

२७. अपने गाँवसे और गाँवके लोगोंसे प्रेम करता हो, और गाँवमें रहकर सेवा करनेको वह तैयार हो ।

(अंग्रेज़ीसे) (चालू)

जो पीला है, सो सब सोना नहीं

हम अपने किसान-आश्रमसे रातके वक़्त दूर मसूरीकी पहाड़ियों-पर बिजलीकी बत्तियोंकी जगमगाती रोशनी देखा करते हैं । वहाँ बिजलीकी बत्तियोंसे जगमगानेवाले ख़ूबसूरत मकान हैं, और मोटर व रिक्शाके लिअे बनी अुम्दा सड़कें हैं, जिनपर थोड़े-थोड़े गज़ोंके फ़ासलेसे बिजलीकी बत्तियोंके खम्मे खड़े हैं। वहाँ पूरव और पच्छिमकी तमाम फ़ैशनेबुल चीज़ोंसे लदी और चकाचौंध पैदा करनेवाली दुकानोंकी क़तारें हैं; और बिजलीकी बत्तियोंसे रोशन और झाड़-पोंछकर आअीनेकी तरह साफ़-सुथरे बने सिनेमा-घर और नाच-घर हैं । लेकिन अिस खुशनुमा दुनियाको झाड़-बुहारकर साफ़ रखनेवाले लोग बमपुलिसों और पेशाब-घरोंकी बग़लमें बनी हुअी अँधेरी और सीलवाली कोठरियोंमें रहते हैं । वहाँ न बिजलीकी बत्तियाँ हैं, न गुसलखाने हैं — ग़रीबी और तमको छोड़ वहाँ और कुछ नहीं ।

जो धनवान् लोग किसी तरहकी मेहनत-मशक़्क़त या गन्दा काम नहीं करते, अुनके घरोंमें नहानेके लिअे गुसलखाने, टब, नल, तौलिये और साबुन वग़ैराका ढेर लगा रहता है । लेकिन अुनके कमोड और पेशाबके बरतन साफ़ करने और अुनके घरोंकी नालियों व गटरोंको धोकर साफ़ रखनेवाले और अुनका मैला कमाने और कूड़ा-कचरा ढोनेवाले भंगियोंके नहानेके लिअे, और नहाने-धोने व पीनेके पानीके लिअे, अुस नलको छोड़कर और कोअी साधन नहीं, जिसपर वे मैलेके डोल वग़ैरा साफ़ करते हैं ।

जिनके अैश-व-आरामकी ज़िन्दगीके लिअे झाड़ू देनेवाले भंगियोंकी यह जात पैदा हुअी है, मसूरीके अुन अमीरों और दौलत-मन्दोंसे मुझे दो बातें कहनी हैं । आअिये, जो लोग आपकी ख़ूबसूरत अिमारतोंको साफ़-सुथरी और सुहावनी बनाये रखते हैं, हम साथ चलकर अुनके घरोंका मुआयना करें ।

रोज़गार-धन्धेकी चहल-पहलवाले बाज़ारको छोड़कर आप पहाड़के ढालवाले अिस तंग रास्तेपर मेरे साथ चलिये — लोग कहते हैं, अिस रास्तेपर बत्तियाँ न होनेसे रातके वक़्त अिधरसे गुज़रना ख़तरनाक है । यह रही अिनसानोंके रहनेके लिअे बनी हुअी कोठरियोंकी क़तार । (मसूरीमें अैसी क़रीब बीस बस्तियाँ हैं ।) देखिये, यहाँ अपनी नाक अच्छी तरह दबाकर रखिये ! क्योंकि यहाँ नज़दीक ही बमपुलिस विराजमान है । लेकिन पहले अिन कोठरियोंमेंसे अेकाधको तनिक झाँककर देखिये तो ! क्या आप अच्छी तरह देख नहीं पाते ? बेशक, नहीं देख पाते होंगे, क्योंकि अिनमें खिड़की ही कहाँ है ? और अिन घरोंके अन्दर आनेकी तो हिम्मत ही नहीं होती । क्यों ? लेकिन अन्दर तो चलना ही होगा । देखिये भला ! दरवाज़ेकी आड़में अेक ग़रीब औरत चूल्हेपर रोटी सेंकनेकी कोशिशमें लगी है; कहीं अिसकी अेकाध रोटीपर आपका पैर न पड़ जाय, या चूल्हेकी ठीक बग़लमें रक्खे गये बिस्तरेसे आप कहीं टकरा न खा जायँ ! ताज्जुबकी बात है कि यह बिस्तरा जल नहीं जाता ! मालूम होता है, अब आपकी आँखें यहाँकी धुँधली रोशनीमें देखना सीख गअी हैं । तो अब आगे देखिये । अुस तरफ़ कुछ बिस्तरे, पुरानी पेटियाँ, टोकनियाँ, और फटे-पुराने कपड़ों वग़ैराका अेक ढेर-सा लगा है, और वहीं आस-पास कुछ लोग भी बैठे हैं; अब ज़रा अिस कोठरीकी लम्बाअी-चौड़ाअी मापकर देखिये — १५ फुट लम्बी और १० फुट चौड़ी ! और जानते हैं, अिसमें कुल कितने आदमी रहते हैं ? औरत, मर्द और बच्चे मिलाकर सिर्फ़ १५ ! चूल्हेका धुआँ आपका दम घोट रहा है; तो ख़ैर, चलिये, बाहरकी ताज़ा हवामें निकल चलें । लेकिन बाहर भी ताज़ा हवा कहाँ है ? कोठरीकी दीवारके बाहर अुस तरफ़ वह क्या चीज़ है ? आम लोगोंके लिअे बने पेशाब-घरोंकी क़तार, और अुसीसे लगा बमपुलिस । अब हिम्मत न हारिये, जब अितनी दूर आ गये हैं, तो आख़ीरतक अिसे देख ही डालिये । यह देखिये, बमपुलिसके पास ही यह नल लगा है, जहाँ गन्दे डोल धोये जाते हैं । क्या आप पानी पीजियेगा ? मगर यहाँ तो ये लोग आपको अिसी नलका पानी दे सकेंगे । औरत, मर्द, बच्चे सभी अिस नलपर नहाते-धोते हैं, और पीनेका पानी भी यहींसे भर लेते हैं । क्या आप मन-ही-मन घिनाने लगे हैं ? मेरा ख़याल है कि अब आप यहाँसे भाग जाना चाहते हैं । अच्छी बात है, जाअिये, मगर जिस नलपर गन्दे डोल धोये जाते हैं, अुसकी अुस बग़लवाली कोठरीमें अेक बार ज़रूर झाँक लीजिये । देखिये, ज़रा सँभलकर अन्दर जाअिये, क्योंकि कोठरीका फ़र्श बाहरकी ज़मीनसे नीचा है, और पास ही लगे अुस नलके गन्दे पानीकी वजहसे अुसमें हद दरजेकी सील हो गअी है । अिस घरमें अेक खिड़की है तो, मगर ख़बरदार ! अुसके बहुत नज़दीक न जाअिये, क्योंकि अुसकी दीवारमें बड़ी-सी दरार पड़ गअी है, और किसी दिन वह पहाड़ीके अुस तरफ़ ढह पड़ेगी ।

बस, अितनी घुमाअी बहुत है । अब आप अपने सुहावने बग़ीचोंवाले साफ़ बँगलेमें तशरीफ़ ले जाअिये । लेकिन क्या यह कभी मुमकिन होगा कि आज आपने जो नज़ारा अपनी आँखों देखा, अुसकी याद तबतक आपको चैन न लेने देगी, जबतक मसूरीकी जगमगाती पहाड़ियोंपरसे आप अिन काले धब्बोंको मिटा नहीं डालते ?

किसान-आश्रम, २८-१०-'४६

(अंग्रेज़ीसे) मीराबहन

सबसे मुफ़ीद अिलाज

गांधीजीकी राय है कि रचनात्मक या तामीरी काम हिन्दू-मुस्लिम अेकता और हमारे देशके दूसरे सवालोंके हलका सबसे मुफ़ीद अिलाज है। क़ाज़ीरखिल (नोआखाली ज़िला) से प्रो० जे० सी० कुमारप्पाको लिखे अेक ख़तमें गांधीजी कहते हैं —

"नोआखालीमें मैं जो काम कर रहा हूँ, वह मेरी ज़िन्दगीका सबसे मुश्किल काम है । और मैं जानता हूँ कि देश-सेवाका काम करनेवाले लोग अपने-अपने क्षेत्रोंमें तामीरी कामके लिअे भरसक कोशिश करके ही मेरे यहाँके काममें कारगर हिस्सा ले सकते हैं । जो काम आपने अपने हाथमें ले रक्खा है, वह यहाँके हो रहे कामको सफल बनानेमें शायद सबसे ज़्यादा मदद पहुँचा सकता है । साथ ही, मैं यह भी मानता हूँ कि यहाँ अेक गाँवसे दूसरे गाँवमें घूमकर लोगोंको सफ़ाअी, चरखे, बुनाअी और हर गाँवके लायक़ दस्तकारीकी बातें समझानेका मेरा काम जैसा बहुत मुश्किल है, अुसी तरह आपका काम भी है ।"

(अंग्रेज़ीसे)

www.vinoba.in

नक़्शा

अिस नक़्शेमें पूरबी बंगालके नोआखाली ज़िलेका वह हिस्सा दिखाया गया है, जहाँ गांधीजी अपना प्रेम और शान्तिका सन्देश पहुँचानेके लिअे अेक गाँवसे दूसरे गाँवकी पैदल-यात्रा कर रहे हैं। अिसमें गांधीजीकी यात्राके ४ फरवरीको साधुरखिलमें खत्म हुअे पहले हिस्सेके गाँव और २५ फरवरीको खत्म होनेवाले दूसरे हिस्सेके गाँव दिखाये गये हैं।

अिस अुम्दा नक़्शेके लिअे हम कलकत्तेके 'हिन्दुस्तान स्टेण्डर्ड' के क़र्ज़दार हैं।

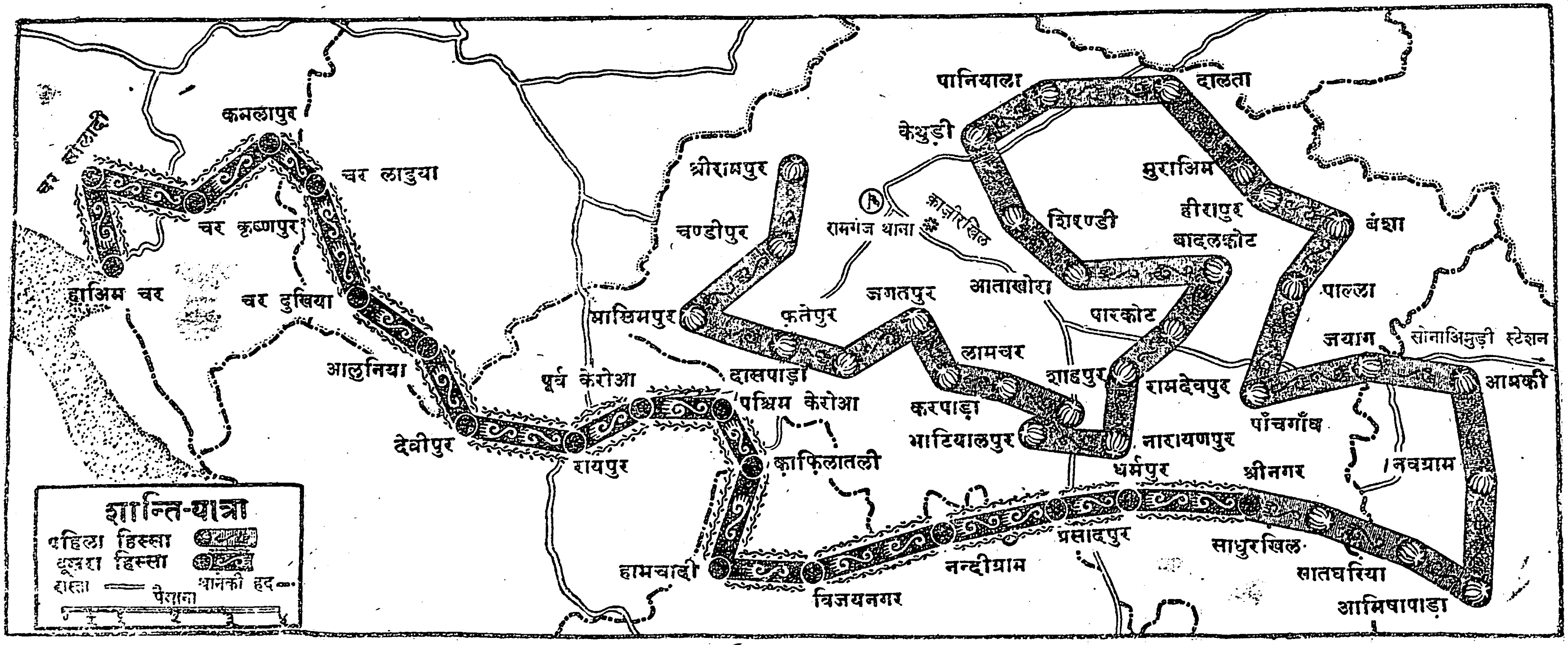

नीचे गांधीजीकी पैदल-यात्राका सिलसिलेवार और तारीखवार प्रोग्राम दिया गया है। गाँवके सामने गांधीजीके वहाँ पहुँचने और ठहरनेकी तारीख दी गअी है।

१. श्रीनगर – ५ फरवरी; २. धर्मपुर – ६; ३. प्रसादपुर – ७; ४. नन्दीग्राम – ८; ५. विजयनगर – ९ और १०; ६. हामचादी – ११; ७. क़ाफ़िलातली – १२; ८. पूरबी केरोआ – १३; ९. पच्छिमी केरोआ – १४; १०. रायपुर – १५ और १६; ११. देवीपुर – १७; १२. आलुनिया – १८; १३. चर दुखिया – १९; १४. चर लाडुआ – २०; १५. कमलापुर – २१; १६. चर कृष्णपुर – २२; १७. चर सोलादी – २३; १८. हाजिमचर – २४ और २५।

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

२३ फरवरी १९४७

बेहूदे दावे

हमने यह सुझाया था कि स्टर्लिंग पावने और हिन्दुस्तानके नामधारी 'पब्लिक क़र्ज़'के सवालकी जाँचके लिअे अेक निष्पक्ष कमेटी बैठाअी जाय। ब्रिटेनके माने हुअे नेताओंने अिस बारेमें जो बहुतसे ग़ैर-ज़िम्मेवाराना दावे पेश किये हैं, अुनकी वजहसे अैसी कमेटी बैठाना बहुत ज़रूरी हो गया है। अिंग्लैण्डके लड़ाअीके ज़मानेके बड़े वज़ीर मि० चर्चिलने खुद कामन्स-सभामें यह कहा था — "साविक़ सरकारके ज़मानेमें हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरलको यह बता दिया गया था कि जल, थल, हवाअी सेना और राजनीतिके ज़रिये हिन्दुस्तानकी कारगर हिफ़ाज़त करनेकी वजहसे ब्रिटेनको हिन्दुस्तानके सामने अुलट दावा करनेका पूरा-पूरा हक़ रहेगा। अिन्हीं साधनोंसे हिन्दुस्तानकी आज़ादीकी विदेशी हमलेसे हिफ़ाज़त की गअी थी।" यह दावा खुद कअी अैसे सवाल खड़े करता है, जो सिर्फ़ निष्पक्ष पंचके ज़रिये ही तय किये जा सकते हैं।

जापानने हिन्दुस्तानपर हमला क्यों किया? जापानियों या जर्मनोंके हिन्दुस्तानमें अंग्रेज़ोंके सिवा दूसरे कोअी दुश्मन नहीं थे। अिसीलिअे लड़ाअीके अुलटे-सीधे नतीजोंका सारा बोझ अिंग्लैण्डको ही अुठाना चाहिये। अगर यह सच है, तो हिन्दुस्तान अुन तमाम नुक़सानोंके लिअे हरजाना माँगनेका हक़दार है, जो अुसे अंग्रेज़ोंके यहाँ रहनेसे, लड़ाअीके ज़मानेमें अुसके जंगलोंका मनमाना अिस्तेमाल करनेसे और, अिसकी वजहसे हर साल पड़नेवाले अकालोंके कारणसे, अुठाने पड़े हैं। लड़ाअीकी वजहसे बीजके लिअे बचाकर रक्खा गया अनाज भी समेटकर देशके बाहर भेज दिया गया और अब हमें मौक़े-मौक़े पर हाथ लगजानेवाले अनाजसे किसी तरह ज़िन्दगी बसर करनी पड़ रही है। अिसके अलावा, मुद्रा या सिक्कोंकी बेमिसाल बढ़ोतरीके कारण मुल्कका माली अिन्तज़ाम अैसा गड़बड़ा गया है कि अुससे अुबरना हिन्दुस्तानकी ताक़तके बाहर हो गया है। नतीजा यह हुआ है कि लोगोंको अुनकी रोज़मर्राके अिस्तेमालकी चीज़ें भी बड़ी मुश्किलसे मिलती हैं। अिसके लिअे भी हिन्दुस्तान जायज़ तरीक़ेसे ब्रिटेनसे हरजाना माँग सकता है। अिन सब माली नुक़सानोंके अलावा, हिन्दुस्तानने बिना किसी क़सूरके १९४३वाले बंगालके अकालमें अपने ३० लाख आदमी खो दिये। अिस नुक़सानकी भरपाअी किसी तरह नहीं हो सकती। रुपये-पैसेकी शक्लमें हम अिस नुक़सानका अन्दाज़ा कैसे लगा सकेंगे?

मानों यह काफ़ी न था, अिसलिअे लन्दनके 'टाअिम्स' अख़बारने अिनसे भी ज़्यादा बेहूदे सुझाव रक्खे हैं और हमें धमकियाँ दी हैं। वह सुझाता है कि अगर हिन्दुस्तान स्टर्लिंग पावनेकी माँग करेगा, तो अिंग्लैण्ड अमेरिकाकी रायसे अैसे पावनेपर अेक तरफ़ा रोक लगा सकता है। क्या हम पूछ सकते हैं कि अमेरिकाको हमारा जज किसने बनाया? वह अख़बार, अपनी आमदनीमेंसे हिन्दुस्तानकी अितनी भारी रक़म चुकानेकी ब्रिटेनकी नाक़ाबलीयतको अिस तरहका रुख़ अख़्तियार करनेका सही कारण माननेकी दलील पेश करता है। क्या दीवालियापनका फ़ैसला देनेवाली कोअी अदालत किसी आदमीकी पूँजी और क़र्ज़का हिसाब लगाये बिना ही अुसकी दीवालियापनकी दलीलको मंज़ूर कर लेगी? अगर अिंग्लैण्ड सीधे-सीधे हिन्दुस्तानका क़र्ज़ चुकानेसे अिन्कार कर दे, तो हम अिसे समझ सकते हैं। लेकिन अिस तरहके बेहूदे और ग़ैरज़िम्मेवाराना दावे और सुझाव अंग्रेज़ों-जैसी महान् धनी जातिको शोभा नहीं देते।

अिस तरहके ग़ैर ज़िम्मेवाराना दावे सारे सवालकी निष्पक्ष या बेलाग जाँच करके ही ख़त्म किये जा सकते हैं। अुस वक़्त मि० चर्चिल और 'टाअिम्स'को अपना मामला पंचके सामने रखनेका मौक़ा मिलेगा। हमें विश्वास है कि अिस तरहका कमीशन बैठानेमें ज़रा भी देर न की जायगी।

(अंग्रेज़ीसे) जे० सी० कुमारप्पा

सवाल—जवाब

स० — हम किसी रवीन्द्रनाथ या रमनके जिस्मानी मेहनतसे रोटी कमानेपर ही क्यों ज़ोर दें? क्या यह अुनकी दिमाग़ी ताक़तकी निरी बरबादी न होगी? दिमाग़ी काम करनेवालोंको अंग-मेहनत करनेवालोंके बराबर ही क्यों न समझा जाय, क्योंकि दोनों ही समाजको फ़ायदा पहुँचानेवाला काम करते हैं?

ज० — दिमाग़ी काम भी अपना महत्व रखता है और ज़िन्दगीमें अुसकी खास जगह है। लेकिन मैं तो जिस्मानी मेहनतकी ज़रूरतपर ज़ोर देता हूँ। मेरा यह दावा है कि अुस फ़र्ज़से किसी भी अिनसानको छुटकारा नहीं मिलना चाहिये। अिससे अिनसानके दिमाग़ी कामकी तरक़्क़ी ही होगी। मैं तो यहाँतक कहनेकी हिम्मत करता हूँ कि पुराने ज़मानेमें हिन्दुस्तानके ब्राह्मण दिमाग़ी और जिस्मानी दोनों काम करते थे। वे चाहे न भी करते हों, लेकिन आज तो जिस्मानी कामकी ज़रूरत साबित हो चुकी है। अिस सिलसिलेमें मैं आपको टॉल्स्टायके जीवनका हवाला देते हुअे यह बताना चाहूँगा कि अुन्होंने रूसी किसान बॉन्डरेफके जिस्मानी काम के अुसूलको किस तरह मशहूर किया।

धर्मपुर (नोआखाली), ६-२-'४७

(अंग्रेज़ीसे) मोहनदास करमचंद गांधी

खौलते तेलकी कसौटी

अेक ग्राम-सेवकने अपने कामकी रिपोर्टमें नीचेका अेक क़िस्सा दिया है —

अेक गाँवमें 'दादागीरी' यानी ज़बरदस्ती करनेवाले अेक आदमीकी लड़कीके साथ अुसीके घरमें काम करनेवाले अेक हरिजनकी आशनाअी हो गअी। कहा जा सकता है कि अिसमें लड़कीके बापकी रज़ामन्दी थी। क्योंकि वह ख़ुद मनमौज़ी ज़िन्दगी बितानेवाला था, और अिस तरह अुस हरिजनके ज़रिये अपना मतलब गाँठनेकी अुम्मीद रखता था। किसी आदमीसे अुसकी अनबन हो गअी। अुसने अपने घर आनेवाले हरिजनसे कहा — तू अुसे मार डाल। मगर हरिजनकी वैसी हिम्मत न हुअी। जिस आदमीसे अनबन हुअी थी, अुसने पुलिसकी हिफ़ाज़त चाही। पुलिसकी जाँच-पड़तालमें हरिजनने यह क़बूल कर लिया कि 'दादा' अुसके हाथों ख़ून कराना चाहता था, पर अुसने अिनकार कर दिया था। अिसकी वजहसे अब वह हरिजन भी 'दादा'का दुश्मन बन गया। 'दादा'ने हरिजनपर यह अिलज़ाम लगाया कि वह अुसकी लड़कीसे आशनाअी रखता है, और फिर अुसका ख़ून करनेकी धमकी दी। हरिजन घबराया और दौड़ा-दौड़ा ग्राम-सेवकके पास पहुँचा।

ग्राम-सेवक गाँवमें समझौता कराने पहुँचे। वहाँ अुनकी खासी अिज़्ज़त थी। अुन्होंने गाँवके लोगोंको अिकट्ठा किया और अुन्हें समझाया कि वे अिस झगड़ेका आपसमें निपटारा कर लें। 'दादा'ने हरिजनपर अपनी लड़कीके साथ ज़िना करनेका अिलज़ाम लगाया। हरिजनने सफ़ाअी पेश करते हुअे कहा कि लड़कीके बापकी रज़ामन्दी थी। 'दादा'ने अिससे अिनकार किया। लड़कीसे पूछा गया। लड़कीने बापके डरसे आशनाअीका अिनकार करते हुअे कहा कि यह मेरे साथ ज़बरदस्ती किया करता था।

ग्राम-सेवकको लड़कीकी बातपर अेतबार न हुआ। अुसने अुसे समझाया कि वह सच-सच कहे, पर लड़की न मानी। आख़िर सभामें बैठे हुअे किसीने सुझाया कि लड़कीसे कहा जाय, वह खौलते तेलमें हाथ डाले। अगर वह सच्ची है, तो अुसका कुछ न बिगड़ेगा।

सबको यह सुझाव पसन्द आया और ग्राम-सेवक भी राज़ी हो गये — आख़िर वे भी अेक अनपढ़ ज़ातके मगर पढ़े-लिखे और आगे बढ़े

आओी थे। पन्द्रह सेर तेल हाज़िर हुआ और अुबाला गया। ग्राम-सेवकने लड़कीसे कहा — अब भी जो सच हो, सो कह दे, या फिर परीक्षा देनेके लिअे तैयार हो जा। आख़िर लड़कीने अपनी आशनाओी क़बूल कर ली। ख़ुशक़िस्मतीसे अिस तरह खौलते तेलका सुझाव धरा रह गया।

कुछ दिन पहले काठियावाड़की तरफ़का भी अैसा ही अेक क़िस्सा सुना गया था। किसी काठीने अपने घरकी चोरीका पता लगानेके लिअे चौदह-पन्द्रह औरतोंके हाथ खौलते तेलमें डलवाये थे। वे बेचारी सभी जलकर हैरान हुओी थीं।

ग्राम-सेवकोंको तो कभी अिस तरहकी कसौटी सुझानी ही न चाहिये। पुराणोंकी अैसी बातोंको दैवी चमत्कारोंकी सच्ची कहानियाँ समझनेके भरममें रहना अच्छा लगता हो, तो भले लगो; लेकिन अुनपर अमल करनेकी भूल हरगिज़ न की जानी चाहिये। किसीका अैसा कड़ा अिम्तहान लेनेका हमें हक़ ही क्या है? बहुत मुमकिन है कि खौलते तेलमें हाथ डलवानेके डरका मारा बेगुनाह आदमी भी गुनाह क़बूल कर ले।

अिस सिलसिलेमें हमें अीशुख्रिस्तकी मिसाल हमेशा याद रखनी चाहिये। अेक दफ़ा अेक व्यभिचारिणी औरत अुनके सामने हाज़िर की गअी। यहूदी क़ानूनमें कहा गया है कि अैसी औरतपर पत्थर फेंककर अुसे मार डाला जाय। लोगोंने अीशुसे कहा — हमें अिस सज़ापर अमल करनेकी अिजाज़त दो। अीशुने कहा — आप लोगोंमेंसे जो बिलकुल बेगुनाह हो, वह पहला पत्थर फेंके। भला, अैसा बेगुनाह कौन होता? सब मुँह लटकाये चले गये। अकेली वह औरत रह गअी। अीशुने अुस औरतसे कहा — जा, बहन, अपनी ज़िन्दगी सुधार। औरतने अीशुके पैर छुअे और अुनका आभार मानकर चली गअी।

किसी सेवकको निर्दोषताकी अैसी कसौटी करनेकी ग़लती न करनी चाहिये। अगर कोअी सुझाये भी, तो अुसे मना करना चाहिये।

साबरमती, २२-१-'४७

(गुजरातीसे) किशोरलाल घ० मशरूवाला

गांधीजीकी पैदल-यात्राकी डायरी

२८-१-'४७

गांधीजीने प्रार्थनाके बादकी अपनी तक़रीरमें कहा — "मुझे बड़ी ख़ुशी है कि आज सुबह अपनी पैदल-यात्राके वक़्त मुझे अेक हिन्दू बाड़ी और दो मुसलमान बाड़ियोंमें ले जाया गया। मुझे अिनके बारेमें पहलेसे कोअी जानकारी न थी। लेकिन मुझे दिली दोस्तीकी हमेशा तलाश रहती है, और जब वह मुझे वहाँके लोगोंकी निगाहोंमें मिल गअी, तो मैं .ख़ुशीसे अुन बाड़ियोंमें चला गया। अुन लोगोंकी बड़ी ख़्वाहिश थी कि मैं कुछ खाअूँ। मैंने कहा कि अभी मेरे खानेका वक़्त नहीं है। लेकिन आप मेरे पास फल भेज सकते हैं और मैं .ख़ुशीसे अुन्हें खा लूँगा। मेरी नातिन, जो मेरे साथ थी, जनानखानेमें गअी। औरतें अुससे बड़ी मोहब्बतसे मिलीं और अेक बूढ़ी औरतने, जब अुसे मालूम हुआ कि वह कौन है, अुसे अपनी छातीसे लगा लिया। अेक बाड़ीमें अुसे मछली और रोटी खानेके लिअे कहा गया। अुस बेचारीने कहा कि वह मछली तो नहीं खा सकती, लेकिन रोटी ज़रूर ले सकती है। मगर अुसने माफ़ी चाही कि वह अितनी जल्दी खानेकी आदी नहीं है। औरतोंको अुसके विटल जानेका शुबहा हुआ। जब अुसे अुनके शुबहेका पता चला, तो अुसने फ़ौरन अेक निवाला खा लिया। अिससे अुन औरतोंको बड़ा सन्तोष हुआ। मेरे या मेरे साथियोंके लिअे न तो कोअी जात-पाँतका बन्धन है और न किसी दूसरी जातवालेके साथ खानेमें कोअी रुकावट है। लेकिन मैं अपने मुसलमान दोस्तोंसे प्रार्थना करता हूँ कि वे छुआछूत माननेवाले हिन्दुओंको निबाह लें। मैं मानता हूँ कि यह ग़लत चीज़ है। लेकिन सच्ची मोहब्बतकी जाँच साथ-साथ खाने वग़ैरासे ही नहीं होनी चाहिये। वक़्त आनेपर यह ग़लती मिट ही जायगी। अिस तरफ़ काफ़ी तरक़्क़ी की जा चुकी है। अिस बीच जहाँ कहीं भी हम सच्ची दोस्ती देखें, अुसकी तारीफ़ करें। सिर्फ़ अिसी तरह लोग साथ-साथ सच्चे दोस्तोंकी तरह रह सकते हैं। अिस सिलसिलेमें मैं २६ जनवरीकी अेक मिसाल देता हूँ। मेरे साथके प्रेसवालोंने हिन्दुओं, मुसलमानों और दूसरी जातवालोंकी अेक मामूली-सी दावतका अिन्तज़ाम किया था। मुसलमान अिसमें शरीक नहीं हुअे। अुस ग़रीब आदमीने, जिसके झोंपड़ेमें वे लोग ठहरे हुअे थे, कहा कि अुसे दावतमें शरीक होनेके लिअे मजबूर न किया जाय। अुसने यह दलील दी कि अिस वाक़येसे वह किसी मुसीबतमें न फँस जाय। अुनके चले जानेके बाद मुमकिन है कि अुसे अिस्लाम क़बूल करनेके लिअे कहा जाय। मैं अुसके अिस डरको समझ गया और प्रेसवालोंको सलाह दी कि वे यह दावत अुसके अहातेमें न करें।"

गांधीजीने आगे कहा — "मैं अुस दिनके लिअे कोशिश करूँगा, जब कि हिन्दू और मुसलमान अपनी-अपनी कमज़ोरियोंको दूर करके दिलसे अेक-दूसरेके ज़्यादा पास आ जायँगे। मैं नहीं जानता कि वह दिन कब आयेगा, लेकिन अिसके लिअे ज़रूरत पड़ी, तो मैं अपनी जान भी देनेके लिअे तैयार हूँ। आप सब लोग मेरे साथ मिलकर भगवान्से प्रार्थना करें कि वह दिन जल्दी आये।"

२९-१-'४७

प्रार्थनाके बादकी अपनी तक़रीरके शुरूमें गांधीजीने कुछ मुसलमान दोस्तोंके पूछे हुअे सवालकी चर्चा की। अुन्होंने कहा — "मुझसे पूछा गया, 'क्या आप यह चाहते हैं कि मुसलमान आपकी प्रार्थना-सभाओंमें हाज़िर रहें'? मैंने जवाब दिया कि मैं नहीं चाहता कि हिन्दू और मुसलमान मेरी प्रार्थना-सभाओंमें हाज़िर रहें। लेकिन अगर सवाल पूछनेवाले भाअीकी यह मन्शा हो कि मुसलमानोंका अैसी सभाओंमें आना मुझे पसन्द है या नहीं, तो मुझे यह कहनेमें कोअी हिचकिचाहट नहीं होगी कि मैं यक़ीनन अुनका आना पसन्द करूँगा। अिसके अलावा, बेशुमार मुसलमान बरसोंसे मेरी प्रार्थना-सभाओंमें शरीक होते रहे हैं।

"दूसरा सवाल था — 'क्या आप ग़ैरमुस्लिम होते हुअे भी .क़ुरानकी आयतें पढ़ना या राम और कृष्णके साथ रहीम और करीमको जोड़ना बुरा नहीं समझते? मुसलमान अिसे सुनना पसन्द नहीं करते।' मैंने जवाब दिया कि मुसलमानोंके अिस अेतराज़से मुझे दुःख और ताज्जुब होता है। मेरे ख़यालमें यह अेतराज़ अुनकी तंगख़याली को ज़ाहिर करता है। आपलोगोंको यह जानना चाहिये कि प्रार्थनामें .क़ुरानकी आयतोंका पढ़ना मैंने बीबी रैहाना तैयबजीके ज़रिये शुरू करवाया था। वह अेक सच्ची मुसलमान हैं। अुनकी अुस तजवीज़के पीछे कोअी सियासी मक़सद नहीं था। जैसा कि कहा जाता है, मैं कोअी अवतारी पुरुष नहीं हूँ। मैं तो .ख़ुदाका अेक बन्दा हूँ और छोटे-से-छोटे मर्द या औरतसे भी अपनेको छोटा मानता हूँ। मेरा हमेशा यह ख़याल रहा है कि मैं मुसलमानोंको ज़्यादा अच्छे मुसलमान, हिन्दुओंको ज़्यादा अच्छे हिन्दू, अीसाअियोंको ज़्यादा अच्छे अीसाअी, और पारसियोंको ज़्यादा अच्छे पारसी बनाअूँ। मैंने कभी किसी भाअी या बहनसे अपना धर्म बदलनेको नहीं कहा। अिसलिअे मेरे ख़यालमें सवाल पूछनेवाले भाअीको यह जानकर .ख़ुशी होगी कि मेरा धर्म अितना लम्बा चौड़ा है कि अुसमें दुनियाकी सारी मज़हबी किताबोंकी बातें समा जाती हैं।

"दूसरी बात यह है कि कुछ दोस्त यह कहते हैं कि हिन्दुओंने क़सूरवार मुसलमानोंके ख़िलाफ़ अदालतोंमें जो मुक़दमे दायर किये हैं, वे दोनों जातियोंके बीच सुलह करानेमें रुकावट डालते हैं। अिससे मुझे बड़ा ताज्जुब होता है। भले आदमियोंके बीचकी सुलहका क़सूरवारोंके मुक़दमोंसे क्या ताल्लुक़? मैं अिस अेतराज़को तो समझ सकता हूँ कि झूठे मुक़दमे वापस ले लिये जायँ। मैं अैसा अेतराज़ करनेवालोंका दिलसे साथ दूँगा। झूठी क़सम खानेवाले सब लोगोंपर अदालतमें मुक़दमा चलाया जाना चाहिये। अदालतके मुक़दमोंसे बचनेका सही रास्ता यह है कि क़सूरवार पूरी आजिज़ीके

साथ आम जनताके सामने अपने क़सूरोंको क़बूल करें और अुसके फ़ैसलेको मानें । मैं अिस तरहकी हलचलमें ख़ुशीसे मदद करूँगा ।

"तीसरी बात यह है कि जो नौजवान रोज़ीकी तलाशमें कलकत्ता और दूसरी जगह गये हैं, अुनको चाहिये कि वे थोड़ा वक़्त गाँवोंके लिअे भी ज़रूर दें । अुनके लिअे सबसे आसान बात यह होगी कि वे आपसमें मिलें और अैसा बन्दोबस्त करें कि अुनमेंसे क़रीब आधे नौजवान दफ़्तरोंसे छुट्टी लेकर कुछ महीनोंके लिअे गाँवोंमें काम करें । बादमें अुनकी जगह दूसरे ले लें । अगर वे चाहें, तो गाँववालोंकी सेवाका कोअी-न-कोअी रास्ता अुन्हें मिल ही जायगा । जो ख़ुद जाकर सेवा न कर सकें, वे पैसेसे मदद पहुँचा सकते हैं ।"

आख़िरमें गांधीजीने अेक मिसाल देते हुअे कहा — "पिछली लड़ाअीमें अिंग्लैण्ड, रूस और दूसरे देशोंके हर ख़ानदानने अपने-अपने देशकी रक्षाके लिअे ज़्यादा-से-ज़्यादा हट्टे-कट्टे आदमी और औरतें भेजी थीं । दरअसल दुनियामें दिली अेका क़ायम करनेका यही अेक रास्ता है । मुझे अुम्मीद है कि हम भी अपने मुल्कमें छोटे-छोटे स्वार्थोंसे अूपर अुठकर वह अेका क़ायम करेंगे, जिसके बिना ज़िन्दगी जीने लायक़ नहीं रहती ।"

३०–१–'४७

आज गांधीजीने प्रार्थनामें १५ मिनट देरसे पहुँचनेके लिअे माफ़ी माँगते हुअे कहा — "ज़माँ साहब और युसुफ़ साहबके साथ कुछ काम होनेकी वजहसे मुझे देर हो गअी । वे लोग मुझे अेक नमूनेका मकान दिखाने ले गये थे, जो अुन्होंने बनवाया है । वह अच्छा मकान है, लेकिन मेरी रायमें हिन्दुस्तानकी आबहवामें वह अिनसानके रहने लायक़ जगह नहीं है । अैसे मकानको सन्दूक ही कहा जा सकता है । भट्टी-जैसे अुस मकानमें रहनेवाले लोग गरमीसे भुन जायँगे, और अपनी आदतके मुताबिक़ जब वे घरके दरवाज़े और खिड़कियाँ बन्द करेंगे, तो अुनका दम घुट जायगा । अिसलिअे मैंने तो अुन्हें बाँस, पुआल और छप्परकी आरामदेह झोंपड़ियाँ बनवानेकी राय दी है । अैसी झोंपड़ियाँ हिन्दुस्तानी वातावरणमें — खासकर नारियल व सुपारीके अूँचे और शानदार पेड़ोंके बीच — बड़ी सुन्दर, हवादार और ठण्डी मालूम होंगी ।

"जब अिन अफ़सरोंने मुझे यह बताया कि बेआसरा लोग छावनियोंसे अपने-अपने गाँवोंको लौटने लगे हैं, तो मुझे बड़ी ख़ुशी हुअी । मुझे अुम्मीद है कि लोग अिसी जोशके साथ लौटते रहेंगे । लोगोंको अपने दिलसे हर तरहका डर निकाल देना चाहिये और अपने हिन्दू या मुसलमान देशवासियोंके बीच अपनेको सहीसलामत समझना चाहिये । जब आप सिर्फ़ भगवान्से डरना सीख लेंगे, तो आप अपने साथियोंसे न डरेंगे । अगर आप ख़ुद न डरें, तो दुनियामें आपको कोअी भी न डरा सकेगा । अपनी ज़िन्दगीके पिछले ६० सालोंमें मैं यही तजरबा करता रहा हूँ ।"

गांधीजीने तीसरा सवाल कुछ मछुओंका अुठाया, जो पिछली शाम अुन्हें मिले थे, और कहा — "अुनकी शिकायत है कि अगर बड़ी तादादवाली जातिने अुनका बायकाट किया, तो अुनका अिस अिलाक़ेमें रहना नामुमकिन हो जायगा, क्योंकि सालके बहुत बड़े हिस्सेमें यहाँ मछली मारनेका धन्धा लोगोंके निजी तालाबोंतक ही महदूद रहता है । बात अिस हदतक पहुँच गअी है, यह जानकर मुझे ताज्जुब होता है । अगर क़ुदरतकी नेमतोंवाले अिस हिस्सेके हिन्दू और मुसलमान अपने मौजूदा सियासी मतभेदोंसे अूपर अुठकर अिनसानियत और भाअीचारेको फिर न अपनायेंगे, तो लोगोंका यहाँ जीना नामुमकिन हो जायगा । अिसलिअे मुझे अुम्मीद है कि यहाँके लोगोंकी मिली-जुली कोशिशोंसे यह हालत सुधर जायगी और गाँवोंमें सच्ची शान्ति क़ायम हो सकेगी ।"

३१–१–'४७

प्रार्थनाके बाद अपनी तक़रीर शुरू करते हुअे गांधीजीने कहा — "आज आप भारी तादादमें अिकट्ठा हुअे हैं । फिर भी आप सारी प्रार्थनामें पूरी तरह ख़ामोश रहे, अिसलिअे मैं आपको मुबारकबाद देता हूँ । मेरे पास मुसलमान लेखकोंके दो ख़त आये हैं । अुन्होंने मुझे ढाढस बँधाते हुअे लिखा है कि 'आपको लोगोंकी अुस टीका या नुक़ताचीनीसे नहीं घबराना चाहिये, जिसमें कहा गया है कि आपको परदा या अिस्लामसे सम्बन्ध रखनेवाली दूसरी बातोंपर बोलनेका कोअी हक़ नहीं है' । क़ुरानका हवाला देते हुअे अुन लेखकोंने यह राय ज़ाहिर की है कि अिस्लामके अुसूल बड़े अुदार हैं और वह ज़रूरतसे ज़्यादा सहिष्णु या बरदाश्त करनेवाला है । वह नुक़ताचीनीका स्वागत करता है और दुनियाके लोगोंसे क़ुरान पढ़नेके लिअे कहता है । अुनमेंसे अेकका यह भी कहना है कि दुनियाका कोअी भी गिरोह या राष्ट्र कभी पैग़म्बरके बिना नहीं रहा । अिन ख़तोंका ज़िक्र करके मैं आप लोगोंको यह दिखाना चाहता हूँ कि सारे मुसलमान ओछे विचारके नहीं हैं । मुझे यह भी अुम्मीद है कि आप लोग, जिनमें मुसलमान बड़ी तादादमें हैं, अुन दो लेखकोंके सबूतको मानेंगे, क्योंकि वे निष्पक्ष या ग़ैरजानिबदार मालूम होते हैं ।"

अिसके बाद कुछ कार्यकर्ताओंने गाँधीजीसे यह सवाल पूछा —

"मुसलमान, हिन्दू कारीगरों और दस्तकारोंका बायकाट कर रहे हैं और मछली मारना, देवदारका बेगार, पानकी खेती करना वग़ैरा धन्धोंको अपना रहे हैं । अैसी हालतमें दोनों जातियोंके बीच सुलह करानेकी अिच्छावाले कार्यकर्ता क्या करें ?"

गांधीजीने जवाब दिया — "मैं अुम्मीद करता हूँ कि यह ख़बर बढ़ा-चढ़ाकर कही गअी है और कम-से-कम मुसलमानोंने अिस बायकाटमें हिस्सा लिया है । मेरे ख़यालमें अिसे बरदाश्त नहीं किया जा सकता । अिस तरहकी किसी हलचलका लाज़िमी नतीजा यह होगा कि हिन्दू अुन सूबोंको छोड़नेके लिअे मजबूर हो जायँगे, जहाँ मुसलमान ज़्यादा तादादमें हैं । लेकिन मैंने यह कभी नहीं सुना कि किसी भी नेताने अैसे नतीजेके बारेमें सोचा हो या अुसे बढ़ावा दिया हो । जिन लोगोंने मुझे यह ख़बर सुनाअी है, अुन्हें चाहिये कि वे अिस बातको हाकिमों तक पहुँचा दें । यह काम बायकाट करनेवालोंको सज़ा दिलानेके ख़यालसे नहीं, बल्कि अुनके बारेमें सरकारी अैलान करानेके ख़यालसे किया जाना चाहिये । आप सब लोग मेरे साथ भगवान्से प्रार्थना करें कि वह दोनों जातियोंको समझ दे ।"

दूसरा सवाल था — "यहाँ अेक आन्दोलन चल रहा है, जिसका मक़सद यह है कि ज़मीनके मालिकको फ़सलका जो आधा हिस्सा मिलता है, अुसे घटाकर अेक तिहाअी कर दिया जाय । अिसके बारेमें आपकी क्या राय है ?"

गांधीजीने कहा — "मैं ज़मींदारके हिस्सेको आधेसे अेक तिहाअी कर देनेकी अिस हलचलका स्वागत करता हूँ । मेरे विचारसे यह अेक महत्त्वकी हलचल है । यह ज़मीन हम सबके मालिक, अुस भगवान् की है और अिसलिअे अुसपर काम करनेवालेकी है । लेकिन जबतक यह आदर्श क़ायम नहीं होता, तबतक ज़मींदारके भागको घटानेका आन्दोलन ही ठीक है ।

"लेकिन अिस हलचलमें दबाव या हिंसासे कभी काम न लिया जाय । मैं हिंसामें हिस्सा नहीं बँटा सकता । लोगोंमें अिस हलचलके अनुकूल राय पैदा करके ही यह सुधार किया जा सकता है । सुधारकोंको धीरज रखनी चाहिये । अिस कहावतमें मेरा पूरा विश्वास है कि 'जैसा मक़सद वैसे ज़रिये' । मेरी रायमें यह मानना नुक़सानदेह है कि मक़सद अच्छा हो, तो ज़रियोंकी चिन्ता करना ज़रूरी नहीं, फिर वे कितने ही हिंसाभरे या ग़ैरमुनासिब क्यों न हों । शकभरे ज़रियोंका अिस्तेमाल करनेसे ही कअी आन्दोलन नाकामयाब हुअे हैं ।"

१–२–'४७

अिस सभाने हिन्दू और मुसलमानोंकी तादादके नाते पिछली तमाम सभाओंको मात कर दिया था । अिसलिअे जब गांधीजी सभामें आये, तब शोर बहुत था । गांधीजीने सभामें आये हुअे लोगोंका ध्यान अिस ओर खींचते हुअे कहा — "तमाम सभाओंका आम क़ायदा यह

www.vinoba.in

है कि लोगोंको बिलकुल खामोश और चुपचाप रहना चाहिये, फिर सभामें आनेवालोंकी तादाद कितनी ही बड़ी क्यों न हो ।

"कल शामको अेक मौलवी साहब थोड़ी देरके लिअे बोलना चाहते थे। मैं समझ गया कि वे क्या कहना चाहते हैं। अिसलिअे मैंने अपने दस्तूर के खिलाफ़ अुन्हें घड़ीसे ठीक पाँच मिनट बोलनेकी अिजाज़त दी। लेकिन मौलवी साहबने तीनही मिनट में अपनी बात कह दी। अुन्होंने मेरी अुस रायके बारेमें नाराज़ी ज़ाहिर की, जो मैंने बंगालके परदेके रिवाजके बारेमें दी थी, और कहा कि मुझे अिस्लामकी बातोंपर बोलनेका कोअी हक़ नहीं। मेरे खयालमें यह मज़हबी तंगनज़री है। मै समझता हूँ कि अिस्लामके सन्देशको पढ़ना और अुसका अर्थ करना मेरा हक़ है। मौलवी साहबने नाराज़ी ज़ाहिर करते हुअे यह भी कहा कि नौजवान राजा रामके नामके साथ रहीमको, जो खुदाका नाम है, और कृष्ण के नाम के साथ करीमको न जोड़ा जाय। मेरे खयालमें यह अिस्लामके बारेमें अेक संकुचित भावना है। अिस्लाम कोअी अैसा मज़हब नहीं, जिसे सन्दूकमें महफ़ूज़ या सुरक्षित रक्खा जाय। दुनियावालोंको यह आज़ादी है कि वे अिस्लामके अुसूलोंको जाँचें, और अुन्हें मंज़ूर या नामंज़ूर करें। मैं अुम्मीद करता हूँ कि अिसके बारेमें यह तंगनज़री न रहेगी।

"अिस सिलसिलेमें मैं आप लोगोंका ध्यान डॉ० सुशीला नय्यरके अुस काम की तरफ़ खींचना चाहता हूँ, जो वह चंगीरगाँव में कर रही हैं। वे सेवाग्राम जाकर अुस अस्तालका काम सँभालना चाहती हैं, जिसका अिन्तज़ाम अुनके ज़िम्मे है। लेकिन अुनके मुसलमान बीमार अपने भले-चंगे होनेतक अुन्हें छोड़ना नहीं चाहते अुन्होंने यह भी कहा कि अुस गाँवमें, पिछले अक्तूबरकी लूटमें हिस्सा लेनेवाले लोग खुद होकर लूटी हुअी जायदादका कुछ हिस्सा लौटा रहे हैं। मेरी रायमें यह अेक अच्छा शगुन है। अगर यह छूत फैली, तो जहाँतक पब्लिक लूट-मारका ताल्लुक़ है, अदालतोंके लिअे कोअी काम नहीं रह जायगा। कम-से-कम मैं तो सरकारसे यही कहूँगा कि अगर लूटा हुआ माल वापिस कर दिया जाता है, तो वह मुक़दमा चलानेका हक़ छोड़ दे। मगर मेरा कहना है कि मालकी यह वापसी पूरी और अीमानदारीसे भरी हो, मुक़दमोंको टालनेका बहाना भर न हो; फिर चाहे माल पब्लिक लौटाये, चाहे क़सूरवार। मेरा मक़सद दिलोंको बदलना है, फौज या पुलिसकी लादी हुअी अस्थाअी या आरज़ी सुलह क़ायम करना नहीं। आम लोगोंकी सरकार जनतापर अपनी मरज़ी लाद नहीं सकती।"

अिसके बाद गांधीजीने नीचे दिये हुअे सवालका जवाब दिया —

"आपने सरमायादारोंको ट्रस्टी बननेकी सलाह दी है। क्या अिसका यह मतलब है कि वे अपनी जायदादका मालिकाना हक़ छोड़ दें और अुससे अेक अैसा ट्रस्ट क़ायम करें, जो क़ानूनकी नज़रमें जायज़ हो, और जिसका अिन्तज़ाम लोकशाही ढंगपर किया जाय? मौजूदा ट्रस्टीके मरनेपर अुसका अुत्तराधिकारी कैसे मुक़र्रर किया जाय?

गांधीजीने जवाब दिया — "बरसों पहले मेरा जो विश्वास था, वही आज भी है कि हर चीज़ भगवान्की है। भगवान्ने ही अुसे बनाया है। अिसलिअे वह अुसकी सारी प्रजाके लिअे है, किसी अेक खास अिनसानके लिअे नहीं। जब किसी अिनसानके पास अुसके मुनासिब हिस्सेसे ज्यादा होता है, तो वह अुस हिस्सेका भगवान्की प्रजाके लिअे ट्रस्टी बन जाता है।

"अीश्वर सर्वशक्तिमान (क़ादिरे मुतलक़) है। अुसे कोअी चीज़ जमा करके रखनेकी ज़रूरत नहीं। वह हर दिन नअी सृष्टि बनाता है। अिसलिअे अिनसानका भी यह अुसूल होना चाहिये कि वह अितना ही अपने पास रक्खे, जिससे आजका काम चल जाय। कलके लिअे वह चीज़ें जमा करके न रक्खे। अगर आम तौरपर लोग अिस सचाअीको अपने जीवनमें अुतारें, तो वह क़ानूनी बन जायगी और ट्रस्टीशिप अेक क़ानूनी जमात हो जायगी। मैं चाहता हूँ कि यह चीज़ हिन्दुस्तानकी दुनियाको देन हो। तब गोरों और अुनकी औलादके लिअे आस्ट्रेलिया और दूसरे मुल्कोंकी तरह कहीं भी दूसरोंका शोषण करने और अपने लिअे ज़मीन, जायदाद और दूसरी चीज़ें रिज़र्व रखनेका सवाल नहीं रहेगा। अिन भेदभावोंमें पिछले दो महायुद्धोंसे ज्यादा ज़हरीले युद्धके बीज भरे हैं। जहाँतक ट्रस्टीका अुत्तराधिकारी मुक़र्रर करनेका ताल्लुक़ है, मौजूदा ट्रस्टीको क़ानूनके मातहत अपना अुत्तराधिकारी चुननेका हक़ रहेगा।"

३-२-'४७

गांधीजीने हिचकिचाते हुअे मुस्लिम लीगके कान्स्टिटयुअेन्ट असेम्बलीपर पास किये गये प्रस्तावका ज़िक्र किया। "अुस प्रस्तावमें कहा गया है कि कांग्रेसने ६ दिसम्बरकी ब्रिटिश सरकारकी घोषणा मंज़ूर करनेके बारेमें जो प्रस्ताव पास किया है, वह फरेबसे भरा है। जो कुछ अुसमें कहा गया है, वह अुसकी मंशा नहीं है। लीगने यह भी कहा है कि कान्स्टिटयुअेन्ट असेम्बलीके चुनाव और अुसकी दूसरी कार्रवाअी ग़ैरक़ानूनी हैं। मेरी राय है कि अेक पार्टीको दूसरी पार्टीपर बेअीमानीका अिलज़ाम नहीं लगाना चाहिये। अुन-जैसी बड़ी जमातोंके लिअे अैसा करना ठीक नहीं है। कोअी वजह नहीं, कि वे अेक-दूसरीको अपना दुश्मन मानें। अिस तरह बरतनेसे आज़ादी नहीं मिल सकेगी। अगर कान्स्टिटयुअेन्ट असेम्बलीके चुनाव और अुसकी दूसरी कार्रवाअी ग़ैरक़ानूनी हैं, तो अदालतसे अुसका फैसला कराना चाहिये; नहीं तो अिस अिलज़ामका कोअी मतलब नहीं रह जाता। अगर आप अदालतोंको नहीं मानते, जैसा कि मैंने सन् १९२० और अुसके बादसे अुन्हें नहीं माना, तो ग़ैरक़ानूनीपनकी बातें बन्द होनी चाहियें। मुस्लिम लीगको मेरी सलाह है कि वह असेम्बलीमें शामिल होकर वहाँ अपना केस रखे और अुसकी कार्रवाअीपर अपना असर डाले। अगर वह अैसा नहीं करती, तो मैं अुसे सलाह दूँगा कि वह असेम्बलीकी अीमानदारीकी जाँच करे और देखे कि वह मुस्लिम सवालोंके साथ कैसा सलूक करती है। आपको अपने खातिर और देशके खातिर असेम्बलीमें शामिल होना ही चाहिये। अिसके बाद लीगने कहा है कि असेम्बली सिर्फ़ सवर्ण हिन्दुओंकी ही नुमाअिन्दगी करती है। दरअसल असेम्बलीमें हरिजन, अीसाअी, पारसी, अेंग्लो अिण्डियन और वे सब लोग हैं, जो अपने-आपको हिन्दुस्तानके बेटे समझते हैं। अुसमें शामिल होनेवाले हरिजनोंकी दूसरी बड़ी तादादका ज़िक्र न भी करें, तो डॉक्टर अम्बेडकरने असेम्बलीमें हाज़िर होनेकी भलमनसाहत दिखाअी है। सिक्ख तो वहाँ अभी भी हैं। लीगके लिअे असेम्बलीमें शामिल होकर अपनी लड़ाअी लड़नेका रास्ता खुला पड़ा है।

"ब्रिटिश सरकारके बारेमें, जैसा कि लीगका अन्दाज़ा है कि वह असेम्बलीको बरखास्त कर देगी, मुझे अुम्मीद है — अगरचे वह कुछ हिल गअी है — कि सरकार अुस अज़खुद (अपनी मर्ज़ीसे बनाये हुअे) मसौदेका आखिरतक अीमानदारीसे पालन करेगी। मैं मानता हूँ कि अगर कुछ सूबे स्टेट पेपरके अनुसार अपनी आज़ादी क़ायम रखना चाहें, तब भी ब्रिटिश सरकार अुस पेपरके मुताबिक़ चलनेके लिअे बँधी हुअी है। मुझे अुम्मीद है कि अंग्रेज़ लोग हिन्दुस्तानसे अीमानदारीका बरताव करनेकी अपनी सारी साख खो नहीं देंगे।"

गांधीजीने सुननेवालोंको यह चेतावनी देते हुअे अपनी तक़रीर खतम की कि "मुझे जो लाचार होकर लीगकी राजनीतिका ज़िक्र करना पड़ा है, अिससे आपलोग यह नतीजा न निकालें कि हिन्दुओं और मुसलमानोंको आपसमें अेक-दूसरेको अपना दुश्मन समझना चाहिये। लीगने अैसा कोअी अैलान नहीं किया है। सियासी झगड़ोंको आप लोग चोटीके राजनीतिज्ञोंतक ही रहने दें। अगर ये झगड़े देहातमें घुस गये, तो वह अेक बदक़िस्मती होगी। हिन्दुस्तानकी आज़ादी तलवारसे नहीं, बल्कि दोस्ती और आपसी तसफ़ियेसे हासिल होगी। मैं पाकिस्तानका असली मतलब समझानेके लिअे ही नोआखालीमें ठहरा हूँ। हिन्दुस्तानमें बंगाल ही अेक अैसा सूबा है, जहाँ अिसे

www.vinoba.in

करके दिखाया जा सकता है । बंगालने लायक़ हिन्दू और लायक़ मुसलमान पैदा किये हैं । अिस सूबेने राष्ट्रीय लड़ाअीमें बहुत मदद दी है । बंगालके लिअे यह मौज़ूँ होगा कि अब वह यह दिखाये कि हिन्दू और मुसलमान किस तरह दोस्तों और भाअियोंजैसे अेक साथ रह सकते हैं । तब अुसके लिअे कमीवाला सूबा बने रहनेकी कोअी वजह नहीं रह जायगी । अुसे बहुतायतवाला सूबा बनना चाहिये ।"

४-२-'४७

आज प्रार्थना-सभा खास बुलावेसे सलीमुल्ला साहबके बाड़ेमें हुअी । सलीमुल्ला साहब साधुरखिलके खास मुसलमान माने जाते हैं । अुन्होंने यक़ीन दिलाया कि तालियोंके साथ रामधुन गानेपर कोअी अेतराज़ नहीं होगा ।

गांधीजीके भाषणके मौक़ेपर कुछ मुसलमान दोस्तोंने बँगलामें अेक तक़रीर पढ़नेकी मन्शा ज़ाहिर की । गांधीजीने कहा — "आपकी मरज़ी हो, तो आप ख़ुशीसे पढ़ सकते हैं ।" वह तक़रीर मसजिदोंके सामने बाजा बजाने, गाय काटने वग़ैराके बारेमें थी । गांधीजीने कहा — "अिन सवालोंसे मेरा कोअी ताल्लुक़ नहीं । ये क़ानूनी सवाल हैं । मैं तो आपके दिलोंको जीतना चाहता हूँ, और अुन्हें अेक कर देना चाहता हूँ । अगर यह हुआ, तो हर चीज़ अपने-आप ठीक हो जायगी । अगर आपके दिल अेक न हुअे, तो कुछ भी ठीक नहीं होगा । तब बदक़िस्मतीसे गुलामी ही आपके पल्ले पड़ेगी । आप लोग अुस सर्वशक्तिमान् (क़ादिरे मुतलक़) ख़ुदाकी ग़ुलामी मंज़ूर करें । अिससे कोअी मतलब नहीं कि आप अुसे किस नामसे पुकारते हैं । तब आप किसी अिनसान या अिनसानोंके सामने घुटने नहीं टिकायेंगे । यह कहना नादानी है कि मैं राम — महज़ अेक आदमी — को भगवान्के साथ मिलाता हूँ । मैंने कअी बार खुलासा किया है कि मेरा राम ख़ुद भगवान् ही है । वह पहले था, आज भी मौजूद है और आगे भी हमेशा रहेगा । न कभी वह पैदा हुआ, न किसीने अुसे बनाया । अिसलिअे आप जुदा-जुदा मज़हबोंको बरदाश्त करें और अुनकी अिज़्ज़त करें । मैं ख़ुद मूर्तियोंको नहीं मानता, मगर मैं मूर्तिपूजकोंकी अुतनी ही अिज़्ज़त करता हूँ, जितनी औरोंकी । जो लोग मूर्तियोंको पूजते हैं, वे भी अुसी अेक भगवान्को पूजते हैं, जो हर जगह है, जो अुँगलीसे कटे हुअे नाखूनमें भी है । मेरे अैसे मुसलमान दोस्त हैं, जिनके नाम रहीम, रहमान, करीम हैं । जब मैं अुन्हें रहीम, करीम और रहमान कहकर पुकारता हूँ, तो क्या मैं अुन्हें ख़ुदा मान लेता हूँ ?

"आप यह न सोचें कि नोआखाली या आसपासके हिस्सोंमें सब ठीक है । अगर मुझे मिली हुअी खबरें सच हैं, तो मामला बिलकुल शान्त नहीं हुआ है । अुन बातोंका या होनेवाली बरबादीका मैं ज़िक्र नहीं करता; क्योंकि मैं ज़ज़्बात या भावनाओंको उभाड़ना नहीं चाहता । बदला लेनेमें मेरा विश्वास नहीं है । मैं पठानोंके साथ रहा हूँ । बादशाह खानने पीढ़ी दर पीढ़ीसे चली आती हुअी बदलेकी भावनासे अुकताकर अहिंसाका गुण सीखा है । अुनके लिअे मैं पूर्णताका दावा नहीं करता । अुन्हें भी गुस्सा दिलाया जा सकता है । मगर मेरा दावा है कि बदला लेनेसे ख़ुदको रोकनेवाली बुद्धि अुनमें है । नोआखालीमें मैं यही बात चाहता हूँ । जबतक आप पूरी तरह यह न मान लेंगे कि दोनों फ़िरक़ोंमें सच्ची सुलह हुअे बिना पाकिस्तान या हिन्दुस्तानमेंसे कुछ भी मिलनेवाला नहीं, तबतक ग़ुलामी ही आपके हिस्से रहेगी ।

"चार नौजवान मुसलमान दोस्तोंने मुझसे मुलाक़ात की । अुन्होंने अिस बातपर खेद ज़ाहिर किया कि नोआखाली और अुसके नज़दीकके हिस्सोंमें दंगेके दरम्यान मारे गये लोगोंकी बढ़ाचढ़ाकर कही गअी तादादको मैंने ठीक नहीं किया । मैंने अिसलिअे अैसा नहीं किया कि जो कुछ मैंने यहाँ देखा है, अुस सबको ज़ाहिर करनेकी मेरी मंशा नहीं है । मगर यदि अिससे ही मामला सुधरता हो, तो मैं यह कहनेके लिअे आज़ाद हूँ कि अेक हज़ार आदमियोंके ख़ूनकी ताअीद करनेवाला कोअी सबूत मुझे नहीं मिला । यह नम्बर सचमुच बहुत कम है । यह मंज़ूर करनेके लिअे भी मैं आज़ाद हूँ कि बिहारकी खूँरेज़ी और हैवानियतके सामने नोआखालीकी वारदातें फीकी पड़ जाती हैं । मगर यह मंज़ूर करनेका यही मतलब होता है कि मुझसे बिहार जानेके लिअे कहा जाय । मैं नहीं जानता कि यहाँसे मैं जितनी सेवा कर सकता हूँ, अुससे ज़्यादा सेवा बिहार जाकर कर सकूँगा । अगर मैं अपनी राय पक्की किये बग़ैर किसीके कहनेसे वहाँ चला जाअूँ, तो मैं किसी कामका नहीं रह जाअूँगा । जिस क्षण मैं यह महसूस करूँगा कि नोआखालीके बजाय बिहारमें रहना मेरे लिअे ज़्यादा ज़रूरी है, तो मुझे किसीके कहनेकी ज़रूरत नहीं पड़ेगी । मेरा खयाल है कि आज मैं वहाँ हूँ, जहाँसे मैं दोनों जातियोंकी महान् सेवा कर सकता हूँ ।"

(अंग्रेज़ीसे)

दूधकी समस्या

लड़ाअीकी वजहसे हमारे मुल्कमें दूधकी भारी कमी हो गअी है । अच्छी नस्लके बहुतसे जानवर फ़ौजी ज़रूरतोंको पूरा करनेके लिअे कटवा डाले गये, और जो बचे हैं, अुनको भी फ़ौजकी अेक या दूसरी ज़रूरतके लिअे खत्म किया जा रहा है । अिसलिअे हमें अपने देशमें दूधकी पैदावारको बढ़ाना है, और अिसके लिअे दुधार जानवरोंकी तादाद और अुनकी नस्ल दोनोंमें सुधार करना है । सरकार अबतक बहुतसी जगहोंमें फ़ौजकी ज़रूरतें पूरी करनेके लिअे जानवरोंकी नस्लमें सुधार कर रही थी । अिस कामके लिअे अैसे साँड़ पाले जा रहे थे, जिनसे भारी भरकम बैल मिल सकें, जो बोझा खींचनेके काममें आ सकें । ये बड़े जानवर फ़ौजके लिअे चाहे जितने फ़ायदेमन्द हों, मगर वे करोड़ों ग़रीब किसानोंके बूतेके बाहरकी चीज़ हैं । क्योंकि अिनको पालने जैसी अुनकी औक़ात नहीं । किसानको तो गँठीले और मज़बूत बैल चाहियें । सरकारी मवेशी-फार्मोंके जो साँड़ अभीतक दूसरे कामोंमें लाये जाते थे, अुन्हें सरकार अब दुधार जानवरोंकी नस्ल सुधारनेके लिअे भेज रही है । नतीजा यह हुआ है कि अुन जानवरोंका दूध बढ़नेके बजाय बड़े बैल पैदा हो रहे हैं । यह भी ग़लत तरीक़ेपर सोची हुअी अेक योजनाका नतीजा है । सरकारको चाहिये कि वह अपने मवेशी-फार्मोंमें फ़ौरन अैसे साँड़ रक्खे, जो जनताकी ज़रूरत पूरी करें ।

और देखिये, पॉलीसी कमेटीकी दूध सब-कमेटीने दूध अिकट्ठा करने और अुसकी सार-सँभाल करनेके केन्द्र क़ायम किये हैं, और अुसके लिअे ज़्यादा ठण्डे गोदाम और रेलसे लाने-लेजानेकी सहूलियत देनेकी योजना मंज़ूर की है । शायद अिसका यह मतलब हो कि देहातोंसे दूध अिकट्ठा करके शहरोंको ले जाया जाय । आजकल बहुतसे शहर अैसे दूधपर मुनहसिर रहते हैं, जो अुसे पैदा करनेवाले देहातियोंके बच्चोंके मुँहसे छीन लिया जाता है । जहाँ कहीं भी दूध अिकट्ठा किया जाता है, वहाँ वही दूध लिया जाय, जो दूध बेचनेवालों और अुनके घरके लोगोंकी भोजनकी ज़रूरतोंको पूरा करनेके बाद बच रहता है; नहीं तो अिस प्रोग्रामसे गाँववालोंकी तन्दुरुस्तीको नुक़सान ही पहुँचेगा ।

अैसी स्कीमें, जो बिना सोचे-समझे बना ली जाती हैं, हमारी हालतको पहलेसे अच्छी बनानेके बजाय बिगाड़नेमें ही मददगार होती हैं ।

(ग्रामअुद्योग पत्रिकासे) जे० सी० कुमारप्पा

विषय-सूची

		पृष्ठ
बुनियादी तालीम		२५
जो पीला है, सो सब सोना नहीं	... मीराबहन	२६
सबसे मुफ़ीद अिलाज		२६
नक़्शा		२७
बेहूदे दावे	... जे० सी० कुमारप्पा	२८
सवाल-जवाब	... गांधीजी	२८
खौलते तेलकी कसौटी	... किशोरलाल मशरूवाला	२८
गांधीजीकी पैदल-यात्राकी डायरी		२९
दूधकी समस्या	... जे० सी० कुमारप्पा	३२